Vol. 7, Issue: 3, March: 2019
ISSN:(P) 2347-5404 ISSN:(O)2320 771X

अस्पृश्यता और महात्मा गाँधी

केतुलभाई किरीटभाई परमार

१.भूमिका

अस्पृश्यता मानव जातत के लिए अविशाप है। अस्पृश्यता को कोई भी राष्ट्र एंव सभ्य समाज के लिए घातक है। महात्मा गांधी ने अस्पृश्यता अन्मूलन में अपना सारा जीवन लगा दिया। गांधी पहले व्यक्ति हुए जिन्होंने अस्पृश्यता की भावना को सवर्णों में पाया। गांधी छूआछूत के लिए सवर्णण हिंदूओ को दोष देते थे और अस्पृश्यता निवारण के लिए सवर्ण हिंदू के द्रष्टिकोण में परिवर्तन लाना चाहते थे। इसी वजह से गाँधीइस समस्या का समाधान हिन्दू धर्म एवं जाति के ढांचे में करने के पक्ष में थे। उनका मानना था की जिस प्रकार दलितों के लिए भौतिक उत्थान आवश्यक है, उसी प्रकार सवर्ण एवं सम्पन्न वर्ग के लिए आध्यात्मिक उत्थान आवश्यक है।

गाँधी अस्पृश्य जातियों का उत्थान धार्मिक और नैतिक द्रष्टिकोण से करना चाहते थे, जिससे सवर्ण-अवर्ण के भेदभाव को समाप्त करके इन जातियों को राष्ट्रीय एकता व सामंजस्य की धारा में लाया जा सके।

२.अस्पृश्यता पर गाँधी के विचार

गांधी 21 वर्ष दक्षिण अफ्रीका में रहे। रंगभेद को उन्होंने नजदीक से देखा और समझा तथा उसे समाप्त करने का वीडा उठाया। गांधी के सामाजिक, राजनीततक और आर्थिक जीवन का आरम्भ ही, रंगभेद, जातिवाद और अस्पृश्य के बीच स्वतंत्रता, न्याय और बन्धुता की स्थापना से होता है।

आधुनिक भारत में सवर्ण वर्ग के सामाजिक और राजनीतिक सुधारकों में गाँधी ही ऐसे प्रथम व्यक्ति थे, जो अस्पृश्यता को न केवल हिन्दू धर्म पर ऐक कलंक मानते थे, बल्कि इस उंच-नीच की दीवार को जड़ से समाप्त करना भी चाहते थे। यही कारण है की गाँधी की द्रष्टि में अस्पृश्यता "एक सौ सिर वाला दैत्य" था। गाँधी मानते थे कि, "इस कलंकित रूप के कारण ही एक वर्ग को अपने पास तक भटकने नहीं दिया जाता और कुछ की छाया लगने से ही छूत लग जाती है" यह एक ऐसी कलंक-कालिमा है, जो जन्म के साथ ही लग जाती है और लाख बार धोओ छूटती नहीं है। "यह बुद्धि और सदाचार की विरोधी है। अर्थात यहाँ सामाजिक आधार पर एक मनुष्य केवल स्पर्श मात्र से भष्ट तथा अपवित्र हो जाता है। उनकी द्रष्टि में "अस्पृश्यता हिन्दू धर्म के सुन्दर उपवन में उग आये अवांछित घास-पात की तरह है, जो इस तरह फैलती जा रही है कि इसके कारण इस उपवन के सुन्दर फूलों के मुरजाने का खतरा पैदा हो गया है। यही कारण था कि गाँधी अस्पृश्यता को हिन्दू धर्म पर एक कलंक तो मानते थे परन्तु "हिन्दू धर्म का अभिन्न अंग नहीं मानते थे"। गाँधी के मतानुसार, "अस्पृश्यता के कारण ही अन्त्यजो के साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता है। इन्हें पेट के बल चलना, गांव से बाहर रखना, जूठा भोजन देना, भूमिहिन रखना और मंदिर प्रवेश जैसे कार्यो से वंचित किया जाता रहा है। इसलिए ऐसा धर्म हिन्दू कदापि नहीं हो सकता है" । वास्तव में गाँधी अन्त्यजों की दयनीय स्थिति के लिए सवर्ण हिन्दूओ को दोषी मानते थे। इसलिए वे कहते है, "

साम्राज्यवादी सरकार (अंग्रेजी सरकार) ने जैसे डायरशाही हम पर चलाई, वैसी ही डायरशाही हिन्दू धर्म के नाम पर सवर्ण हिन्दुओ ने भंगी जाति पर चलाई है" । यही कारण है की गाँधी ने यह स्पष्ट कहा है कि, " में अस्पृश्यों का समर्थन इसलिए करता हु क्योंकि हमने उनके साथ बड़ा अन्याय किया है" ।

गाँधी कहते है की एक स्वस्थ प्रकार की अस्पृश्यता सभी धर्मो में पाई जाती है, वह है स्वच्छता एवं सफाई का नियम। लेकिन भारत में आज जैसी अस्पृश्यता मानी जाती है उसका हिन्दू शास्त्रों में कोई प्रमाण नही है। गाँधी की द्रष्टि में वर्तमान अस्पृश्यता की उत्पत्ति हिन्दू धर्म के क्रमिक विकास की उस अवस्था में आई जब गाय की रक्षा करना हिन्दू धर्म का एक अंग बन गया और गाय को गौ-माता माना जाने लगा। उस काल में सामाजिक नियम बहुत कठोरता से लागू किए जाते थे। उस समय कुछ लोग ऐसे थे, जो अधिक सभ्य नहीं थे और गौ-मांस खाते रहे, उन्हें समाज से तिरस्कृत कर दिया गया और वे तब से अस्पृश्य माने जाने लगे। इस कारण यह सामाजिक पाप, पिता से पुत्र को पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तान्तरित होता रहा। परन्तु उनके द्रष्टिकोण में, "अस्पृश्य मानवता के विरुद्ध एक जधन्य अपराध था"। वास्तविकता यह है कि अस्पृश्यता की उत्पत्ति के विषय में न तो गाँधी का कोई शोध कार्य था और न ही वे इसके लिए चिंतित थे। गाँधी ने स्वयं कहा है, "अस्पृश्यता की उत्पत्ति कब हुई इसके बारे में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता है, में भी सिर्क अनुमान ही लगा सकता हु, और वह सच या जूठ भी हो सकता है। लेकिन एक अंधा भी यह देख सकता है की यह अधर्म है"। फिर भी वे यह स्वीकार करते थे कि, "इस प्रथा की उत्पत्ति समाज की अवनति के दिनों में कुछ काल के लिए आपद धर्म के रूप में हुई"। दुसरे शब्दों में गाँधी का यह मत था कि, "हिन्दू धर्म की अवनति के किसी अवस्था में जब भ्रष्टाचार आ गया और उंच-नीच की भावना ने इसमें प्रवेश करके इसे दूषित बना दिया, तब अस्पृश्यता की उत्पत्ति हुई"। उनके द्रष्टिकोण में, "यह प्रथा हमारे बीच धर्म के नाम पर आई और हिन्दू धर्म में प्रविष्ट कर गई और इसका संबंध धृणा से रहा है। लेकिन इसका मूल आधार धर्म में नहीं है बल्कि उच्चता के जूठे अहंकार ने इसे जन्म दिया है। अर्थात अपने से दुर्बलों को एपने पैरों तले दबाकर रखने की मनोवृत्ति से अस्पृश्यता पैदा हुई है। यह इतनी लंबी अवधि तक इसलिए बरक़रार है क्योकि हमने उन्हें गंदी बस्तियों में रखकर समाज में घुलने-मिलने नहीं दिया है।
सच्चाई यह है की गाँधी हिन्दू धर्म में अस्पृश्यता को स्वीकार नहीं करते थे परन्तु यह अवश्य मानते थे कि गाँधी हिन्दू धर्म में अस्पृश्यता को स्वीकार नहीं करते थे परन्तु यह अवश्य मानते थे कि प्रारंभ में स्वच्छता का एक विधान अवश्य था जिसके पीछे मनोवैग्रानिक धारणाऐ थी। स्वच्छता का यह नियम हिन्दू धर्म में मोक्ष प्राप्त के लिए आवश्यक था, क्योकि अंतिम छुटकारे के लिए शरीर और मन अत्यंत स्वच्छ होने चाहिए। इसलिए प्राचीन हिन्दूओ में मोक्ष प्राप्ति के रूप में इसकी उत्पत्ति हुई थी। परन्तु कालान्तर में इसमें उच्चता के झूठे अहंकार ने प्रवेश कर लिया। इसके लिए वे सवर्ण वर्ग को जिम्मेदार मानते है।

सच तो यह है की गाँधी अस्पृश्यता को गाँधी सभी बीमारियों की जड़ मानते थे। इसलिए वे चाहते थे की अछूतों की दशा को सुधारने कि दिशा में यदि हम एकजुट हो गए तो इससे ज्यादा भौतिक और आधात्मिक कार्य और क्या हो सकता है। वह तो जाति प्रथा को हिन्दू धर्म में केवल व्संगित के रूप में स्वीकार करते थे। उन्होंने जाति-व्यवस्था और अस्पृश्यता को हिन्दू धर्म ग्रंथो के अनिवार्य अंग के रूप में कभी स्वीकार नहीं किया। वे अस्पृश्यता को नष्ट करके दलितों के उत्थान के समर्थक थे। इसलिए उन्होंने अस्पृश्यता-निवारण को अपने रचनात्मक कार्यक्रम में स्वराज्य से भी ज्यादा महत्त्व दिया।

३.अस्पृश्यता उन्मूलन

गाँधी अहिंसक प्रविधि से अस्पृश्यता का भारतीय समाज से उन्मूलन चाहते थे। गाँधी भारतीय समाज से सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विषमता की खाई को समाप्त करके समानता लाना चाहते थे। गाँधी की द्रष्टि में अस्पृश्यता जातियों

के उत्पीडन का कारण धार्मिक और मनोवैग्नानिक बाधाओं को दूर करके अस्पृश्यता का अंत किया जाये। अस्पृश्यता-निवारण कैसे किया जाए, इसके लिए जहां एक और वे अस्पृश्यों मंदिर-प्रवेश के अधिकार से सवर्णों के हृदय परिवर्तन की बात करते थे, वही दूसरी और अनुसूचित जातियों के साथ रहकर स्वच्छता, स्वास्थ्य की जानकारी तथा उनके लिए शिक्षा, शुद्ध जल की व्यवस्था से उनके उत्थान की बात करते थे। उनका यह दृढ विस्वास था कि दलितों को जब तक सामाजिक समानता नहीं मिल जाती, तब तक उनका आर्थिक और राजनीतिक उत्थान नहीं हो सकता।

गाँधी भी मानते है कि उत्थान का कार्य व्यक्ति और समाज की अपनी योग्यता और परिश्रम पर निर्भर करता है। दुसरे शब्दों में गाँधी का यह दृढ मत था कि अनुसूचित जातियों की अस्पृश्यता का अंत तब तक संभव नहीं होगा, जब तक सवर्णों की आत्मा में परिवर्तन नहीं आएगा और दलितोंत्थान तब तक संभव नहीं होगा, जब तक दलितों में अपने कर्तव्य के प्रति जागरूकता नहीं आएगी। यही कारण था कि गाँधी सवर्ण और अवर्ण दोनों को उनके कर्तव्यों का बोध कराने के ले जहां एक ओर सवर्णों को अपने किए का प्रायश्चित कराने के लिए दलितों के मंदिर प्रवेश, सार्वजनिक कुओ, उद्यानों, सरायों, धर्मशालाओ, दाह संस्कार घाटों के प्रयोग का अधिकार दिलाने के लिए आंदोलन चलते रहे, वही दूसरी और दलितों की स्वच्छता और शिक्षा के लिए संस्थाओ का गठन करते रहे।

गाँधी कि द्रष्टि में अस्पृश्यता-निवारण या दलितोंत्थान के प्रश्न को हल करने के लिए सवर्ण हिन्दुओ की आत्मा को बदलना ही एकमात्र मार्ग था, चाहे सफलता मिलने में कुछ वर्ष क्यों न लग जाए। इसलिए वे कहते है कि, " यह रोग ऐसा नहीं है जिसका कोई क़ानूनी इलाज किया जा सके या जिसे संसद के निर्णय से दूर किया जा सके, इसका उपचार तो पूरी तरह इस बात पर निर्भर करता है कि हम अपने हृदय को बदले"। इसलिए गाँधी लिखते है की "जबरदस्ती बाध्य करने के उपाय पर मेरा तनिक भी विश्वास नहीं है। में लोगो को हृदयऔर बुद्धि के धरातलों पर समजा-बजाकर उनसे सत्य की अपनी अवधारणा स्वीकार कराने की कोशिश करता हूं"। गाँधी की द्रष्टि में केवल स्वातंत्र्य वातावरण में ही हृदय परिवर्तन संभव था। गाँधी कहते है "में जिस लक्ष्य को लेकर चल रहा हु, वह यह है कि हर सवर्ण हिन्दू अपने हृदय से अस्पृश्यता की भावना को निकाल दे और इस तरह अपना पूर्ण हृदय परिवर्नत करे"।

४.निष्कर्ष

गाँधीवादी द्रष्टिकोण अनुसूचित जातियों का केवल आर्थिक और राजनीतिक कल्याण से समस्या से समाधान नहीं मानता, बल्कि पहले सामाजिक पहलुओं पर विशेष ध्यान देने की बात करता है। क्योंकि गांधीवाद सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक जीवन को अलग-अलग टुकड़ो में बांटकर उत्थान का समर्थक नहीं रहा है। गाँधी की नजरो में अस्पृश्यता-निवारण और दलितों के भौतिक उत्थान की समस्या केवल अनुसूचित जातियों तक ही सीमित नहीं थी, बल्कि यह सवर्ण हिन्दू या सम्पूर्ण भारतीय समाज की समस्या थी। इसका समाधान न तो अनुसूचित जातियों के द्रष्टिकोण से। इसके लिए एक समन्वित द्रष्टिकोण अपनाए जाने की आवश्यकता थी। गाँधीवादी का एक मूल तत्व यह भी है कि सामाजिक परिवर्तन विधान-निर्माण और जोर-जबरदस्ती से नहीं लाया जा सकता। सामाजिक परिवर्तन मानसिक सोच में और अहिंसात्मक पद्धति से ही आ सकता है।

Vol. 7, Issue: 3, March: 2019
ISSN:(P) 2347-5404 ISSN:(O)2320 771X

संदर्भ

1. मो.क. गांधी, सम्पूर्ण वाडमय, भाग-३५, १९७०
2. मो.क. गांधी, सम्पूर्ण वाडमय, भाग-५८, १९४७
3. मो.क. गांधी, सम्पूर्ण वाडमय, भाग-६४, १९७६
4. मो.क. गांधी, सम्पूर्ण वाडमय, भाग-१९, १९६६
5. महात्मा गाँधी, मेरे सपनों का भारत,
6. उषा महेता, गांधीजी, यूनिवर्सिटी ग्रंथ निर्माण बोर्ड-गुजरात राज्य, १९८७